Research Paper | Social Science | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 7 | Issue : 2 | Feb 2021

LOK SAHITYA KE VIVIDH AAYAM

लोक सहित्य के विविध आयाम

Dr. K. Anita

सहायक प्राध्यापिका, गायत्री विध्यापरिषद कालेजफरडिग्री एन्डपी. जी.कोरसेसे[ए],विशाखपटनम,आन्ध्रप्रदेश

ABSTRACT

साधारण जनता से संबंधित साहित्य को लोक साहित्य कहना चाहिए।इस साहित्य में जनजीवन की सभी प्रकार की भावनाएं बिना किसी कृत्रिमता के समाई रहती है। लोक साहित्य की माद्यम से ही किसी समाज की यथा स्थिति व उसकी संस्कृति की अपूर्ण झलक मिलती है।यह मानव जीवन की अमूल्य अमानत है।लोक साहित्य व्याकरण और शिष्टता के बंधन को भले ही तोड दे,सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बना रहना ही इसकी विशिष्टता है।लोक साहित्य सामान्य जीवन के सर्वांगीण तथ्यों को उद्घाटित करता है। लोक साहित्य अपने व्यापक परिवेश में समस्त देश के जीवन की धार्मिक,सामाजिक तथा सदाचार सम्बन्धी विशेषताओं को सुरक्षित रखता है। लोक साहित्य एक ऐसा विज्ञान है जिसमें मौखिक और भौतिक दोनों ही सामग्रियों का अध्ययन किया जाता है। लोक साहित्य प्राचीन साहित्य होते हुए भी नया है।डां.स्वर्णतता के अनुसार-"लोक साहित्य का क्षेत्र बडा विशद है।।अत्यंत आदिम,जंगली अभिव्यक्तियों से लेकर शिष्ट साहित्य की सीमा तक पहुंचने वाली समस्त अभिव्यक्ति लोक साहित्य के अन्तर्गत आती है।-१

मूल शब्द: अर्थ, परिभाषा,स्वरूप एवं विशेषताएं, लोक साहित्य के प्रकार, महत्व.

भूमिका-

इस साहित्य में जनजीवन की सभी प्रकार की भावनाएं बिना किसी कृत्रिमता के समाई रहती है। लोक साहित्य का अभिप्राय उस साहित्य से है जिसकी रचना लोक करता है।साधारण जनता से संबंधित साहित्य को लोक साहित्य कहना चाहिए। लोक साहित्य में प्रकृति स्वयं गुनगुनाती है।लोक-साहित्य में निहित सौंदर्य का मूल्यांकन सर्वदा अनुभूतिजन्य है।परंपरागत लोक साहित्य किसी एक व्यक्ति की रचना का परिणाम नहीं है। वैसे तो इसके कई प्रमाण दिए जा सकते हैं कि एक ही गीत ,कथा या कहावत एक स्थल पर जिस रूप में होता है दूसरे स्थल पर पहुंचते -पहुंचते उसका वह रूप बदल जाता है।परंपरागत एवं सामूहिक प्रतिभाषाओं से निर्मित होने के कारण विद्वानों ने लोक साहित्य को "अपौरूषेय"की संज्ञा दी है।

उद्देश्य:

"लोक साहित्य के विविध आयाम विषय" को विस्तार रूप से प्रस्तुत करना।

लोक साहित्य -अर्थ एवं परिभाषाएं-- लोक साहित्य शब्द,लोक और साहित्य दो शब्दों का मिलावट है। लोक शब्द का अर्थ -जन सामान्य से है। जन सामान्य के साहित्य ही लोक साहित्य है।लोक जीवन की अभिव्यक्ति को वाणी देना ही लोक साहित्य है।

परिभाषाएं:

1. धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार-"वास्तव में लोक साहित्य वह मौखिक अभिव्यक्ति है जो भले ही किसी व्यक्ति ने गढी हो पर आज इसे सामान्य लोक समूह अपनी मानता है।इसमें लोकमानस प्रतिबिंबित रहता है।"--२

2. डा.रवीन्द्र भ्रमर के अनुसार-"लोक साहित्य जनमानस के सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।यह बहुधा अलिखित ही रहता है और अपनी मौखिक परंपरा द्वारा एक पीढी लोकगीतों का रचनाकार अपने व्यक्तित्व को लोक समर्पित कर देता है।-३

स्वरूप एवं विशेषताएं :

इस साहित्य में लोक जीवन की सच्ची झलक देखने को मिलती है।साधारण जन जीवन विशिष्ट जीवन से भिन्न होता है अत: जन साहित्य का आदर्श विशिष्ट साहित्य से पृथक होता है|किसी देश अथवा क्षेत्र का लोक साहित्य वहां की आदिकाल से लेकर अब तक की उन सभी प्रवृत्तियों का प्रतीक होता है जो साधारण जनस्वभाव के अंतर्गत आती हैं।लोक साहित्य को सर्व देशीर, सर्वकालीन रूप में स्वीकार किया जाता है,इसकी परंपरा मिटती नहीं है बल्कि यह सदैव पीढी दर पीढी मौखिक रूप से हस्तांतरित होते रहती है। लोक साहित्य एक ऐसा साहित्य है जो लोगों के मनोरंजन केलिए रचा गया है।लोक साहित्य की भाषा सीधी,सादी, सरल,व्यावहारिक और आडम्बर रहित होती है।लोक साहित्य किसी विशेष व्यक्ति की रचना नहीं बल्कि पूरे जन समूह की रचना है।लोक साहित्य प्राचीन साहित्य होते हुए भी नया है।

लोक साहित्य के प्रकार:

किसी भी समाज के इतिहास और संस्कृति को भली-भ्रांति समझने केलिए लोक साहित्य का अध्ययन आवश्यक है।लोक साहित्य जनता के कंठों में देश के सभी राज्यों,भाषाओं,और छोटी-छोटी बोलियों के रुप में भरा हुआ है।इस लोक साहित्य के अनेक रूप हैं जिनका वर्णन इस प्रकार है-

1. **लोक गीत** : अंग्रेजी शब्द "फोक सॉंग्स" का हिन्दी रूपांतर है 'लोक गीत"।लोकगीत मौलिक परम्परा में जीवित रहते हैं।सामान्यत:लोक में प्रचलित ,लोक द्वारा रचित एवं लोक केलिए लिखे गए गीतों को लोकगीत कहा जा सकता है।किसी भी देश की सभ्यता एवं पहचान लोकगीत में समाहित होती है।लोक साहित्य का लगभग अधिकांश भाग लोक गीतों में समाहित है।लोक गीतों में किसी प्रकार के अलंकार या उक्ति वैचित्य केलिए स्थान नहीं है।ये धरती से उगते हैं और किसी एक व्यक्ति द्वारा रचे होने पर भी निर्वैयक्तिक होते हैं।तुकांत होने के साथ-साथ इनका शिल्प विधान स्वच्छन्द रहता है।लोक गीतों को निम्नलिखित प्रकार वर्गीकृत किया गया है।-१.संस्कार २.व्रत गीत ३.श्रम गीत ४.रितु गीत ५.जाति गीत

2. **लोक कथा :** लोक साहित्य के अध्ययन में लोक कथाएं महत्वपूर्ण स्थान रखती है।लोक कथाओं की जन्म -भूमि भारत वर्ष है।इन कथाओं का प्रभाव पूरे संसार पर पडा है। ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रंथ है,इसमें सूक्तों के रूप में शुन:शेप आख्यान,श्रवण और शुकन्या की कथा प्राचीनतम कथाओं के संकेत सूत्र हैं।उपनिषदों में नचिकेतना का आख्यान विलक्षण है।पंचतंत्र की कथाएं अपने में अनूठी है।बौद्ध पंडितों द्वारा जातक कथाएं भी प्राचीनतम लोक कथाओं का ही एक रूप है।

   लोक कथाओं को निम्नलिखित भागों में बांटा गया है- १.परि कथा २.व्रत कथा ३.प्रेम कथा ४.दंत कथा ५. पौराणिक कथा ६.नाग कथा ७.बोध कथा

3. **लोक नाटक :** लोक साहित्य का तीसरा रूप है लोक नाटक।लोक नाटक या लोक नाट्य में दो शब्द जुडे हुए हैं "लोक" और "नाट्य"।जन समूह या लोक की कृति जब नाटक के रूप में किसी कथावस्तु को प्रस्तुत करती है तो उसे लोक नाट्य या नाटक कहा जाता है।लोक नाटकों का लोक जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है।लोक नाटक लोक सम्बन्धित उत्सवों,अवसरों तथा मांगलिक कार्यों में अभिनित होते हैं।लोक जीवन के विभिन्न उत्सवों पर पुरूष और बालक भी इन नाटकों को अभिनीत करते हैं। विवाह के अवसर पर अनेक जातियों में स्त्रियां बरात विदा हो जाने पर स्वांग रचती हैं।लोक नाट्यों की भाषा सरल,,सीधी होती है।जिस प्रदेश में नाटक होता है,नट उसी क्षेत्र की बोली का प्रयोग करते हैं।गद्य के बीच में पद्य का भी पुट रहता हैं।।लोक नाटक के प्रमुख प्रकार- १.राम्लीला २.स्वंग ३.यक्षगान ४.भवाई ५.तमाशा ६.नौटंकी ७.जात्रा ८.कथकली ९.मात्र १०.ख्याल

4. **लोक गाथा :** लोक गीतों का ही एक रूप लोक गाथा है।लोक भाषा के माध्यम से जब संगीत के आवरण में कथावस्थु को अभिव्यक्त किया जाता है उसे लोक गाथा कहते हैं।लोक गाथा केलिए अंग्रेजी में "बैलेड" शब्द का प्रयोग किया गया है।लोक गाथा का रचनाकार अज्ञात होता है।इसमें प्रमाणिक मूल पाठ की कमी होती है।ये प्राय:संगीत और नृत्य शैली में अभिव्यक्ति पाते हैं और मौखिक रूप से कंठानुकंठ परम्परित होती है।

5. **मुहावरों, लोकोक्तियां एवं पहेलियां:** लोक साहित्य के अन्तर्गत मुहावरों, लोकोक्तियों एवं पहेलियां महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।मुहावरों का इतिहास उतना प्राचीन नहीं है जितना भाषा की उत्पत्ति का ।मुहावरों में जनता के जीवन की झांकी है डा त्रिपाठी के अनुसार-"मुहावरा किसी बोली या भाषा में प्रयुक्त होने वाला वह अपूर्ण चाक्य खण्ड है जो अपनी उपस्थिति से समस्त वाक्य को सबम,सतेज,रोचक और चूस्थ बना देता है। संसार में मनुष्य ने अपने लोक व्यवहार में जिन-जिन वस्तुओं और विचारों को बडे कौतूहल से देखा और समझा और बार-बार उनका अनुभव किया उन्हीं को उसने शब्दों में बांध दिया है।वे ही मुहावरे कहलाते हैं।"-४

कुछ मुहावरे निम्नवत हैं- "अक्ल पर पत्थर पडना","अपनी खिचडी अलग पकाना","अक्ल चरने जाना","उजाला करना""कलम का धनी",'गले का हार होना"

लोकोक्ति शब्द में "लोक़+"उक्ति" शब्दों का मेल हुआ है। "लोक" का अर्थ है जनसाधारण और "उक्ति"का अर्थ है"कथन"।लोक ने अपने अनुभव पर कसकर इस कथन को अपनाया है,सच माना है,उसे लोकोक्ति कहते हैं।लोक साहित्य में लोकोक्तियों या कहावतों का अपना महत्वपूर्ण स्थान है।सूक्ति का अर्थ है-सुन्दर रीति से कहा गया कथन।इसी उक्ति को यदि लोक अर्थात साधारण मनुष्य प्रयोग में लाते हैं तो वह लोकोक्ति कहलाती हैं।कुछ लोकोक्तियां निम्नवत हैं -"जो पुरवा पुरवाई पावै",सूखी नदे नाव चलावे, तब देखी ऊखी के पोर, "जिसके राम धनी, उसे कौन कमी","जी कहो जी कह्लाओ","जैसा देश वैसा वेश","जैसा कन भर वैसा मन भर"

पहेलियां मानव मस्तिषक की रोचक एवं अनुभव पूर्ण अभिव्यकति है। पहेलियों का प्रयोग किसी की बुद्दि परीक्षा केलिए सदियों से होता आया है।पहेलियों के उत्पत्ति का कारण मनोरंजन के अन्य कोई साधन नहीं रहें होंगे वहां पहेलियों के द्वारा ही मन बहलाया जाता रहा होगा।कूछ पहेलिया निम्नवत हैं-"तीन अक्षर का मेरा नाम।उल्टा सीधा एक समान""सफेद तन हरी पूंछ,न बुझे तो नानी से पूछ","टोपी है हरी मेरी,लाल है दुशाला।पेट में अजीब लगी,दानों की माला","कटोरे पर कटोरा,बेटा बाप से ज्यादा गोरा"

लोक साहित्य का महत्व :

लोक गीतों,कथाओं और गाथाओं में स्थानीय इतिहास का पुट मिलता है।लोक जीवन से जुडे समस्त पहलुओं जैसे सामाजिक रीति-रिवाज,प्रथाएं,मान्यताएं जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कार आदि सभी की उत्पत्ति समाज में ही होती है।समाज-शाश्त्र के समुचित अध्ययन केलिए लोक साहित्य की महता सुविदित है।सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू धर्म है।धार्मिक तथा नैतिक भावना तो लोक साहित्य का प्राण है।ज्ञान एवं नीति की दृष्टि से यह साहित्य पर्याप्त समृद्द है।लोक साहित्य में भाषा विज्ञान के अध्ययन केलिए शब्द भंडार उपलब्द हैं।लोक साहित्य का सांस्कृतिक पक्ष बडा विशद है।संस्कृतिओं के पुनीत इतिहास की परख अनेकांश में लोक साहित्य से संभव है।आज भी हमारा आदर्श हमारा अतीत है।

उपसंहार:

लोक साहित्य में कव्य कला संस्कृति और दर्शन सब कुछ एक साथ है।भारतीय लोक साहित्य जनता के व्यापक जनसमूह की सभी मौलिक सर्जनाओं का परिणाम है।वर्तमान समय में ज्ञान विज्ञान की प्रगति, भूमण्डलीकरण,भौतिकवाद,आर्थिक उदारवाद आदि से विश्व बंधुत्व की भावना का विकास हुआ हैं,वहीं अर्थ की प्रधानता ने जीवन मूल्यों को जड बना दिया है। प्रेम, सौहार्द,बंधुत्व एवं मानवीय संबंधों,प्राचीन परम्पराओं को नष्ट कर रहा है।इस परिस्थितियों में लोक साहित्य का महत्व बढ जाता है। लोक साहित्य अपने व्यापक परिवेश में समस्त देश के जीवन की धार्मिक,सामाजिक तथा सदाचार सम्बन्धी विशेषताओं को सुरक्षित रखता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

I. लोक साहित्य सिद्दान्त और प्रयोग-डा.श्रीराम-पृ-३९

II. हिन्दी साहित्य कोष-डा.धीरेन्द्र वर्मा पृ:६८२

III. लोक साहित्य की भुमिका डा.कृष्ण देव पृ:२२

IV. https://www.hindikunj.com/2020/05/bharatiya-lok-sahitya.html

V. http://www.hindijournal.com/archives/2017/vol3/issue1/2-6-40